Q. ① संरचनात्मक मनोविज्ञान (Structural psychology) की मुख्य विशेषतायें :

मनोविज्ञान की विषय-वस्तु (Subject matter of psychology)

टिचेनर ने यह स्पष्ट किया कि सभी विज्ञान का आरम्भ बिन्दु अनुभूति (Experience) ही होती है। वे वुण्ट के इस विचार से सहमत नहीं थे, कि मनोविज्ञान तात्कालिक अनुभूति (immediate experience) का अध्ययन करता है। तथा भौतिकी मध्यवर्ती अनुभूति (mediate experience) का वास्तव में वे अनुभूति के इस विभाजन से सहमत नहीं थे, टिचेनर के लिए सभी अनुभूतियाँ तात्कालिक (immediate) थी, मनोविज्ञान तथा भौतिकी में अन्तर स्थापित नहीं था कि उनका सम्बन्ध अलग-अलग विषय से था बल्कि स्थापित था, कि वे अपने उभयनिष्ठ विषय-वस्तु (common subject matter) को भिन्न दृष्टिकोण से अध्ययन करते थे, मनोविज्ञान अनुभूति का अध्ययन व्यक्ति के संदर्भ में करता है, जो उस अनुभूति का अनुभव करता है, जबकि भौतिकी अनुभूति का अध्ययन बिना किसी व्यक्ति के संदर्भ में ही करता है। दूसरे शब्दों में भौतिक विज्ञानी अनुभूति का अध्ययन व्यक्ति से स्वतंत्र होकर करते है। जबकि मनोविज्ञानी अनुभूति का अध्ययन व्यक्ति पर आधारित होकर करता है। यही कारण है, कि मनोविज्ञान के विषय-वस्तु (subject matter) की औपचारिक परिभाषा (Formal definition) देते हुए टिचेनर ने कहा है कि अनुभव करने वाले व्यक्ति पर आधारित अनुभूति ही मनोविज्ञान की विषय-वस्तु (subject matter) है।

Scanned with CamScanner

टिचेनर मन (mind) तथा चेतन (consciousness) के बीच का अन्तर किया। उनके अनुसार जन्म से मृत्यु तक व्यक्ति की अनुभूतियों के कुल योग को मन कहा गया है। जबकि किसी दिए हुए समय में व्यक्ति की अनुभूतियों के कुल योग को चेतन (consciousness) कहा जाता है।

टिचेनर के अनुसार मनोविज्ञान की तीन समस्याएँ हैं। क्या (What) कैसे (how) तथा क्यों (Why) क्या से तात्पर्य मानसिक अनुभूति को उनके सरलतम तत्वों में विश्लेषण (analysis) से था, कैसे से तात्पर्य यह स्पष्ट करना था कि मानसिक अनुभूति के तत्व किस तरह से संयोजित होते हैं। तथा कैसे, कैसे, से नियम है। जिससे संयोजन नियमित होता है। क्यों से तात्पर्य उन तरीकों से होता है। जिसके सहारे मानसिक घटनाएँ अपनी दैहिक अवस्था को अर्थात मस्तिष्क एवं तंत्रिका तंत्र से सहसम्बन्धित होते हैं।

वुण्ट के ही समान टिचेनर ने भी चेतन के तत्वों का विश्लेषण किया, टिचेनर के तीन मूल तत्व होते हैं। संवेदन (sensation), प्रतिमा, भाव या मनोभाव वुण्ट प्रतिमा को चेतन का स्वतंत्र तत्व नहीं मानते थे, टिचेनर ने संवेदन को प्रत्यक्षण का एक तत्व माना है। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक (outline of Psychology) में टिचेनर ने संवेदन के 44415 प्रकारों का वर्णन किया है। प्रतिमा विचार के तत्व होते हैं। और उनके द्वारा उन घटनों का प्रतिबिम्बित होता है जो वास्तव में उपस्थित नहीं होते हैं। टिचेनर ने वुण्ट के त्रिविमीय सिद्धान्त को स्वीकृत कर लिया। वुण्ट तथा यह सिद्धान्त

Scanned with CamScanner

के तहत प्रतिपादित तीन आयामों अर्थात सुख-दुख, तनाव-शिथिल उत्तेजना-शांत में टिचेनर ने मात्र पहले आयाम को ही स्वीकृत किया और अन्य दो आयामों को संवेदन एवं प्रतिमा के भीतर ही सम्मिलित कर लिया। अपने जीवन के अंतिम कुछ वर्षों में उन्होंने अपने संप्रदाय (system) को और सरल बनाते हुए कहा कि संवेदन तथा प्रतिमा से भाव अलग नहीं है। तथा अन्त में उन्होंने संवेदन को ही मौलिक प्रकार माना। टिचेनर ने यह स्पष्ट किया कि चेतन के तत्वों की अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं। वुण्ट ने ऐसी दो विशेषताओं को महत्वपूर्ण बतलाया था, वे दो विशेषताएं हैं गुण तथा तीव्रता। टिचेनर ने इन विशेषताओं की सूची में दो और विशेषताओं को जोड़ा अर्थात स्पष्टता तथा अवधि को जोड़ा। इस तरह इसके अलावा संवेदन के एक और विशेषता अर्थात विस्तार भी देखने को मिलता है। टिचेनर ने यह भी स्पष्ट किया कि संवेदन तथा प्रतिमा (image) में दो समान विशेषताएं होती हैं। उन्होंने यह दावा किया कि संवेदन तथा प्रतिमा में अन्तर करना सामान्यतः सम्भव नहीं है। लेकिन तीव्रता की विशेषता के रूप में एक परिमाणात्मक अन्तर किया जा सकता है। Date- 08.04.20

Dr. Pramod Kumar Sahu, Psychology B.A. II
U.S.J. College Rajnagar (MADHUBANI)